TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4383**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥६०॥ ॐ नमः॥ ॥सिंदूरप्रकरके कवित्त लिष्यते॥ ॥छप्पय॥ ॥सोभित तपगजराज सीस सिं
दूरपूरछबि। बोधदिवस आरंभ करनकारन उदोत रवि। मंगलतरु पल्लव कषाय कंतार हु
तासन। बहुगुन रतननिधान मुक्तिकमला कमलासन। इहिविधि अनेक उपमा सहित अरुन
वरन संतापहर। जिनरायपायनष जोति भर नमत बनारसि जोरि कर॥१ ॥दोधकांतवेसरि
छंदः॥ ॥जैसे कमल सरोवर बासै परिमल तासु पौन परगासै। त्यौं कविनाष हि अक्षर जोरै
संत सुजस प्रगटहि चहुं ओर। जो गुनवंत रसाल कवि तौ जग महिमा होइ जो कवि अक्षरगुन
रहित तौ आदरै न कोइ॥२ सुपुरुष तीनि पदारथ साधहिं। धरम विरोध जानि आराध
हिं। धरम प्रधान कहै सब कोइ। अरथ काम धरमहि तै होइ। धरम करत संसार सुष धरम
करत निरवान। धरमपंथ साधन विना नर तिरजंच समान॥३ ॥मनुष्यभवका अधिकार॥
॥कवित्त॥ ॥जैसे पुरुष कोइ धनकारन हींडत दीप दीप चढि जान। आवत हाथ रतन चिंता
मनि डारै जलधि जानि पाषान। तैसे भ्रमत भ्रमत भवसागर पावत नरसरीर परधान। ध
रम जतन नहि करत बनारसि। षोवत वादि जनम अग्यान॥४ ॥कवित्त॥ ॥जो नर पूरब

रिकलपतरु। बोवत मूढ कनक को षेत। ज्यों गजराज वेचि गिरिवर सम कूर कुबुद्धि मोल ष
र लेत। जैसें छांडि रतन चिंतामनि मूरष काच षंड मन देत। तैसें धरम विसारि वनारसि धू
र्त अधम विषै सुष सेत॥५ ॥सवैया॥ ॥ज्यों मतिहीन विवेक विना नर साजि मतंग जु ईंध
न ढोवै। कंचन भाजन धूलि भरे शठ मूढ सुधारस सों पग धोवै। वाहित काग उडावन कार
न डारि महामनि मूरष रोवै। त्यों नर देह दुलंभ वनारसि पाइ अजान अकारथ षोवै॥६ ॥सो
रठा॥ ॥ज्यों जल बूडत कोइ तजि वाहन पाहन गहै। त्यों नर मूरष होइ धरम छांडि सेवत वि
षै॥७ ॥छप्पय॥ हरिगीतका॥ ॥जिन पूजहिं गुर नमहिं जैनमत वैन वषानहिं। संघ भग
ति आदरहिं जीव हिंसा न हि जानहिं। झूठ अदत्त कुसील त्यागि परिगह परमानहिं। क्रोध मा
न छल लोभ जीति सज्जन पहिचानहिं। गुनि संग करहिं इंद्रिय दमहिं देहि दान तप भावजु
त। गहि मन विराग एहिं विधि रहहिं ते जग में जीवन मुकत॥८ ॥अथ पूजाकौ अधिकार॥ ॥
कवित्त॥ ॥लोपै दुरित हरै दुष संकट आपै रोग रहित नित देह। पुंन भंडार भरे जस प्रगटै मुक
ति पंथ सौं करै सनेह। रचै सोहाग देइ सोभा जग परभव पहुंचावै सुरगेह। कुगति बंध दलमलै

वनारसि वीतराग पूजा फल एह॥९ ॥कवित्त॥ ॥देवलोक ताको घर आंगन राजरिद्धि सेवै
तसु पाइ। ताके तन सौभाग आदि गुन केलि विलास करैं नित आइ। सो नर तुरित तिरै भव सा
गर निरमल होइ मोक्ष पद पाइ। दरव भाव विधि सहित वनारसि जो जिनवर पूजै मन ला
इ॥१० ॥कवित्त॥ ॥जो जिनेंद पूजै फूलनिसौं सुरनैननि पूजा तिसु होइ। वंदै भाव स
हित जो जिनवर वंदनीक त्रिभुवन में सोइ। जो जिन सुजस करै जन ताकी महिमा इंद्र
करहिं सुरलोइ। जो जिन ध्यान करंत वनारसि ध्यावहिं मुनि ताके गुन जोइ॥११ ॥क
वित्त॥ ॥ज्यों नर रहै रिसाइ कोप करि त्यों चिंता भय विमुष वषानि। ज्यों कायर संकै रिपु
देषत त्यों दारिद भजै भय मानि। ज्यों कुनारि परिहरै षंड पति त्यों दुरगति छंडै पहिचानि।
हित ज्यों विनीत जैन हि संगति ते सव जिन पूजा फल जानि॥१२ ॥अथ गुरका अधिका
र॥ ॥आचानक छंद पु. निहो॥ ॥पाप पंथ परिहरहिं धरहिं सुभ पंथ पग। पर उपकार निमित्त
वषानहिं मोष मग। सदा अवंछित चित्त जु तारन तरन जग। अइसे गुरु कौं सेवत भागहिं करम
जग॥१३ ॥गीता छंद॥ ॥मिथ्यात दलन सिद्धंत साधक मुकति मारग जानए। करनी अकरनी

×बीज३

सुगतिदुर्गति।पुन्यपापवधानए।संसारम। ×तनतारनयुनजहाजविशेषिये।जगमांहिसुरु
मकहिवनारसि।।औरकोइनदेषिये।।२४।।सवैया।।मातपितासुतबंधुसषी।जनमीनहितसुषकामि
नीपीके।।सवकराजिमतंगज।।मंदराहलसाजिरथीरथीके।दुर्गतिजाइदुषीबिललाइ।परैसिरिआइ
अकेलेहिजीके।।पंथकुपंथगुरूसमझावत।।औरसगेसववारथहीके।।२५।।वस्तुछंद।।रड।।धर्म
नधार्नश्विषमसुषत्याग।करुनारसआदरनत।मिसैनइंद्रीनिरोधन।।व्रतसंयमसहानतपतावैं
सहंतसाधन।एसवकामिनिआवहीज्यौंबिननायसेन।सिवसुषहेतुबनारसी।करुथतीतिगुरुवैन
।२६।।अथजिनमतअधिकार।।कुंडलिया।।देवअदेवदिनहिलषइ।सुगुरुकुगुरुनहिसुरु
धर्मअधर्मगिनैनहीकर्मअकर्मनहिसुकृ।कर्मअकर्मनसुकृ।गुनअगुनजानइ।हितअ
नहितनहिसदहनिपुनमूरषनहिमानइ।कहतबनारसिग्यानदिष्टिनहिअधअधेवदहि।जैन
वचनदृगहीन।लषैनहिदेवअदेवहि।२७।कवित्त।ताकौमनुयजनमसवनिःफल।मननिःफ
लनिःफलयुगकान।गुनअरुदोषविचारभेदविधि।ताहिमहादुर्लभतयहग्यान।ताकौसुगम
नरकदुषसंकटअगमपंथपदईनिरवान।जिनमतवचनदयारसगर्भित।जेनाहिसुनतसिद्धंत

वषान।२८।छप्पय।अग्निकहैविषकहैनीरकहैपावकमानै।तेजतिमिरसमगिनइमित्रकहैरि
पुवषानै।पुहपमालकहैनागरतनपथ्थरसमउम्मइ।चंदकिरनआतपसरूपइहिभांतिजु
लुम्मइ।करुनानिधानअमलानसुनदुगटवनारसिजिनमतपरमतसमानजोमनधरनसो
अजानमूरषअपूत।२९।मरहट्ठाछंद।सुतधर्मविकासैपापविनासैकुपंथउथापनहार।मि
थ्यामतषंडइकुनैविहंडइमंडइदयाअपार।तिस्नामदमारइरागविडारइयहजिनआ
गमसार।जोपूजैध्यावैपढइपढावैसोजगमांहिउदार।३०।कवित्त।।अथसंघकाअधि
कार।।जैसैंनभमंडलतारागनरोहतसिषिरिरतनकीषानि।ज्यौंसुरलोककल्परिकलपद्रुमज्यौं
सरवरअंबुजवनजानि।ज्यौंसमुद्रदरनजलमंडितज्यौंमसिसुविसमहसुषदानि।तैसेंसंघस
कलगुनमंदिरसेवहुभावभगतिमनआनि।३१।कवित्त।जैसेंमारतगाजआसानजिवानमुकति
पंथकीदौर।ताकीसेवकरनसुषउपजतजिन्हसमाननहिमनहिअउर।इंदादिकजाकेपस्व

रत जे। जेगम तीरथ सुचि गैर। जामैं नित्य निवास गुण संपति मोमिरि संघ जगत सिर मौर।२
२॥ कवित्त॥ जाकौ आइ मिलै सुष संपति कीरति रहति है जग छाइ। जिन सौं प्रीति वृटै ताके घट
हितु दिन धरम बुद्धि अधिकाइ। छिनु छिन ताहि लेषै शिव सुंदरि सुरग संपदा मिलै सुताइ। मा
नारगुन राशि संघ की आन रलगति मैं न लाइ॥२३॥ कवित्त॥ जाके लगन मुकति पद पावत इं
द्रादिक पद ने गते को इ॥ ज्यों कृषि के रत धान तै फल उपजत सहज पयार घास तुस होइ। जा
के गुन इम स जेंप नकार न सुरगुर थकित होत मद षोइ। सो सिरि संघ पुनीत बनारसि दुरित हरन
विदेरत त आ लोइ॥२४॥ अहिंसा अधिकार॥ सवैया॥ मुक्रत की षानि इंद्रपुरी की निसनी जो
नि पापर जे षंडन को पान रासि पषिये। नवहु षपावक कुकाइ बेकी मेघ माल कमला मिलाव की दूर् x३
ती जो बिशेषिये। मुकति वधू सों प्रीति पालि वेकों आली सम कुगति के वार दिढ आगल मदिषिये।
अइसी दया कीजै चित तिहुं लोक प्रानी हित और हूं करूत काहू लेषे मैं न लेषिये॥२५॥ आत ३

x नाग वाघव सिकरन नीर पावक नयन जन महिमा निधान संपति सदन। ३ली१०

नकुछंदः॥ जो पश्चिम रवि उगै। तिरै पाषान जल। जो उलटै भुअ लोक होइ सीतल अनल। जो
सुमेरु डगमगै। सिद्ध के होइ मल। तब हूं हिंसा करत न उपजै पुन्य फल॥२६॥ सवैया॥ अग
नि मैं जैसें अरविंद न विलोकियत सूर अथवत जैसें वासर न मानिये। सांप के वदन जैसें अंमित
न उपजत काल कूट षाइ जैसें जीवन न जानिये॥ कलह करत नहिं पाइये सुजस जैसें वाढत रसा
स रोग नास न वषानिये। प्रानी वध मांहि तैसें धर्म की निसानी नांहि या ही तें वनारसी विवेक मन
आनिये॥२७॥ कवित्त॥ दीरघ आउ नाम कुल उत्तम। गुन संपति आनंद निवास। उन्नत विभव सु
गम भव सागर। तीन भुवन महिमा परगा। भुज बल वंत अनंत रूप छवि। रोग रहित नित भोग
विलास। जिन्ह के चित दयाल तिन्ह के रूष। सब सुष होत वनारसिदास॥२८॥ सत्यवचनको अ
धिकार॥ छप्पय॥ गुन निवास विश्वास। वास दारिद दुष षंडन। देव अराधन जोग। मुकति
मारग सुष मंडन। सुजस केलि आराम। धाम सज्जन मन रंजन। मंगल मीत पुनीत मग॥
सुष रासि वनारसिदास भनि। सत्य वचन जयवंत जग॥२९॥ कवित्त॥ जो नसमै न करै निज 4

कीरति ज्यौं वन अगनि दहै वन सोइ । जाके संग अनेक दुष उपजत वहै वैर ष ज्यौं मीच तनतोइ । जामैं ध
रमकथा नहि सुनियत डोर विवाचिओं हन नहि होइ । सो मिथ्यात वचन वनारसि गहत न ताहि व
चनैं सत कोइ ॥३०॥ रोडकछंद ॥ कुमति कुरीति निवास । प्रीति परतीति निवासन । रिद्धि सिद्धि सुष
हरंन । विपति दारिद्र दुष कारन । परवंचन उतपत्ति । सहज अपराध कुलछन । सो यह मिथ्या व
चन नाहि आदरत विचछन ॥३१॥ सवैया ॥ पावक तैं जल होइ । वारिधि तैं थल होइ । शास्त्र तैं क
मल होइ ग्राम होइ वन तैं । कूप तैं विवर होइ । पर्वत तैं घर होइ । वासव तैं दास होइ । हित दुरजन
तैं । सिंघ तैं होइ कुरंग होइ । व्याल स्याल अंग होइ । विष तैं पीयूष होइ । माला अहि फन तैं । विष
म तैं सम होइ । संकट न व्यापै कोइ । एते गुन होहि सत्यवादी दरसन तैं ॥३२॥ अदत्तादानको
अधिकार ॥ रोडकछंद ॥ नाहि रिद्धि अनुसरइ । सिद्धि अति जाय घरै मन । विपति संग परिह
रै । जग न विस्तरइ सुजस घन । नव आरनि तें हित जड़ । कुगति विंछइ न एक छन । सो सुर संप
ति लहै । गहै नहिं जो अदत्त धन ॥३३॥ कवित्त ॥ ताकौं मिलै देव पद शिव पद ज्यौं विद्याधन लहै ४

विनीत । तामैं आइ रहै सुलपंकति । ज्यौं कलहंस कमल मैं मीत । ताहि विलोकि डरै दुष दालिद । ज्यौं
रवि आगमसैं निविनीत । जो अदत्त धन तजै वनारसि । धन्यवंत सो पुरुष पुनीत ॥३४॥ मरहठा छं
द ॥ जो कारति गोपइ । धरम विलोपइ । करै महा अपराधि । जो सुगति तिरोरइ । दुरगति लोरइ । आर
इ सुद्ध उपाधि । जो संकट आनइ । दुरमति ठानइ । वध बंधन को गेह । सब औगुन मंडित । गहै न पं
डित । सो अदत्त धन एह ॥३५॥ कवित्त ॥ जो परजन संताप केलिवन जो वध बंध कुबुद्धि निवास । जो
ग विपति वेलि घन मंडल । जो दुरगति मारग परगास । जो सुरलोक वार दिढ आगल । जो अपहरन
सुकृति सुषवास । जो अदत्त धन तजत साधुजन । तिन्ह हित दिल बनारसिदास ॥३६॥ अथ शील
अधिकार ॥ कवित्त ॥ सो अपजस को डंक वजावत । लावत कुल कलंक परधान । सो चारित कौं दे
त जलंजुलि । पुनवैं न वन कौं दावानल दान । सो शिवपंथ के वार वनावत । आपत विपति मिलन
को थान । चिंतामनि समान जग जो नर । सील रतन निज करत मलान ॥३७॥ रोडकछंद ॥ कुलक
लंक दलमलइ । पापमल पंक पषारै । दारुन संकट हरै । जगत महिमा विस्तारै । संग सुकति पटर 5

चै। सुकृत संचै करुनारमि। सुरगन वंदहि चरन। साल गुन कहत बनारसि॥३८॥ सवैया॥ ताकौं बंध
घ तुयेगम कीनय। पानी न बोरै न पावक जालै। ताके समीपि रहै सुर किंन्नर। सो सुनरीति करै अघ टा
लै। तासु विवेक बढै घट अंतरि। सो सुरके सिव के सुष लालै। ताकी सुकीरति होइ तिहुं जगि। जो नर
सील अषंडित पालै॥३९॥ छप्पय॥ अगनि नीर सम होइ। माल सम होइ भुयंगम। नाहर मृग सम
होइ। कुटिल गज होइ तुरंगम। विष पीयूष सम होइ। सिषरि पाषान षंड मित। विघन उलटि आनंद
होइ। रिपु पलटि होइ हित। लीला मैं तल लाव सम उदधि जल। गृह समान अटवी विकट। इहि विधि
अनेक दुष होहि सुष। सील वंत नरके निकट॥४०॥ परिग्रह को अधिकार॥ कवित्त॥ अंतर मलिन
होइ निज जीवन। विनसै धरम तरोवर मूल। किलमैव यानी तिनलनी वन। धरै लोभ सागर तन थू
ल। उठै वाद मरजाद मिटै सब। सुजन हेम नहि पाव हिकूल। वढत असरसृ रेदुष संकट। यह परिगहि
सबतासमत ल॥४१॥ सवैया॥ कलह गयंद उपजाइवे कौं विंध्यागिरि। कोप गीध अघाइवे कौं सु
मसान है। संकट भुयंग के निवास करिवे कौं बिल। बैर भाव चोर कौं महा निसा समान है। कौं मल

सुगुन घन षंडिवे कौं महा पौन। पुंनवन दाहिवे कौं दावानल दान है। नीतिनय नीर जल साइ वे
कौं हिमरासि। असौ परिग्रह राग दोष कौ निधान है॥४२॥ सवैया॥ प सम कौ अहित। अधीर
ज कौ वाल हित। महा मोह राउ की वसिवि राजधानी है। भ्रम कौ निधान दुरध्यान कौ विलासवन
विपति कौ थान अभिमान की निसानी है। दुरित कौ षेत। रोग सोग उतपति हेत। कलह निकेत दु
रगति कौ निदानी है। असौ परिगह तोग सबनि कौ त्याग जोग। आतम गवेषी लोग या की ओं नि
जानी है॥४३॥ छप्पय॥ ज्यौं नहि अगनि अघाइ। पाइ ईंधन अनेक विधि। ज्यौं सरिताधन नीर तवि
न नहि होइ नीर निधि। त्यौं असंष धन वढत मूढ संतोष न मानइ। पाप करत न हि डरइ। बंधका र
नमन आनइ। परतषि विलोकि जन्मन मरन। अथिर रूप संसार क्रम। समुझै न आप परताप
गुन। प गट बनारसि मोह भ्रम॥४४॥ क्रोध को अधिकार॥ गीता छंद॥ जो सुजन चित्त विकार
कारन। मनहु मदिरा पान। जो भरम तप चिंतावदावन। असित सरप समान। जो बंधु जीवन हर
न विषसम। जगर हन दव दान। सो कोप राशि वि नासि रविजन। लहत सिव सुष थान॥४५॥ क

वित्त॥ नवमुनिकोइ बोइतपतफवर त्रयममजलसी चितवितषेत। उदितग्यानभाषागुनपल्लव। मंग
लफुहपमुकतिफलदेत। नवतहिंकोपदावानलत्रयपञतामहमोहदलयवनसमेत। मोनसमं
तकरतछिनअंतर। दाहतविरषसहितमुनिचेत॥४६॥वस्तुछंद॥ २३॥ कलहमंडन। करनउ
द्वेग। जसषंडनहितहरन। दुषविलापसंतापसाधन। डरवैनसमधरन। धरमधुनमारगबाध
धन। विनयदमनदुरगतिगमन। कुमतिरमनगुनलोप। एसवलछिनजानिमुनि। तजहिनत
सनकोप॥४७॥छप्पय॥ कोपधर्मधनदहै। अगिनिजिमविरषविनासइ। कोपमुजसअवरइ
राहुजिमचंदगरासइ। कोपनीतिदलमलइ। नागजिमलताविहंडइ। कोपकाजसबहरइ। पव
नजिमजलधरषंडइ। संचरतकोपदुषजुपजइ। वढइरषाजिमधूपमहै। करुनाविलोपगुणगो
पसुत। कोपनिबिद्धमहंतकहै॥४८॥मानकौअधिकार॥कवित्त॥ उत्तेनिकसिविपतिमहि
नामव। जगमेंफैलिरहीचहुंओर। ताकेहिगगुनगामनामनहि। मायाकुमतिगुफाअतिघो
र। लहंवधबुद्धिभ्रमरेषासम। उदितकोपदावानलजोर। सोअभिमानपहारपटंतर। तजतना

हिमरहसपकिसोर॥४९॥रोडकछंद॥ नेंजेउपसमथैन। सुमतिजंजीरविहंडै। कुवचनरज
संग्रहै। विनैवनयचकतिषंडै। जगमेंफिरेमुछंद। वेदअंकुशनहिमानै। सउत्पोनरमदअंध
सहनमलअनरथगानै॥५०॥करषाछंद॥ मानसबउचितआचारतेजनकरै। पवनसंचारसि
मघनविहंडइ। मानआदरतनयविनयलोपइसकल। भुजगविषनीरजिमगरसमंडइ। मान
केउदितजगमोहिविनसेमुजस। कुपितमातंगजिमकुमुदषंडइ। मानकीरीतिविपरीतिकर
नतिजिम। अधमकीप्रीतिनरनीतिछंडइ॥५१॥चौपाईछंद॥ मानविषमविषतनसंचरै। विनैवि
नासैवेछिनहरै। कोमलगुनअंविनसंयोग। विनसैमानविषमविषरोग॥५२॥मायाकौअधि
कार॥ रोडकरौछंद॥ कुसलजननकहंवांम। मतरविहरजिमोफथिति। कुगतिजुवतिउरमाल
मोहकुंजरनिवासछिति। समवारिउद्दिमरासि। पावसंतापसहाइनि। अजसथानिजगजानि
नजकुमायाडुषदाइनि॥५३॥विसरिछंद॥ मोहमगनमायामतिसंचे। करिउपावऔरनिकोवं
चै। अपनीहानिलषेनहिमोह। सुगतिहरिदुरगतिदुषहोइ॥५४॥पद्धडीछंद॥ मायाअविसास

विलासमोह। जोकरैमूरुजनधनमनेह। सोऊगतिबंधनद्दिलेषेणम। तजिनयविलासुपयपिवैतेम॥५५
अथतानकछंदः॥ ज्योरोगीकरिकुपथ। वढावैरोगतन। स्वादलेपटीनयो। कहेमुऊजनमधन। त्योंक
पटीकरिकपट। सुगधकउधनहरै। करैऊगतिकोबंध। हरषमनमेंधरै॥५६॥ इतिमायाधिकार
समाप्तः॥ अथलोभाधिकारलष्यते॥ सवैया॥ सहेघोरसंकटसमुद्रकीतरंगनिमद्द। कंपइचित
तीतपंथगाढेवीऊवनमें। गनेनकृषिकर्मजामेंसमर्मकीनलेसकहूं। संकलेसहूपहेकेजूकिम
रैरनमें। नजइनिजधामकोविरामपरदेशधावइ। सेवइप्रभुकूपनमलीनहेमनमें। डोलइ
धनकारजअनारजमलीनमूरिख। असीकरतुनिकरैलोनकीलगनमें॥५७॥ सवैया॥ धरनप्रता
परविरोकिवेकोधाराधरे। सुकृतसमुद्रसोषिवेकोऊंतनंदहे। कोपदवपावकतननकोअ
रनिदारु। मोहविषतरुहकोमहादिढकंदहे। परमविवेकनिसिमनियमिवेकोराहु। कीरति
लताकलापदलनगयंदहे। कलहकोकेलितोनआपदानकोनिधु। असोलोभयाहीकोनि
पाकउमदंदहे॥५८॥ छप्पय॥ परमधर्मवनदहे। दुरितअंबरगतिधारइ। ऊजसधूमउदगारइ ३

स
लूरिनयनसमविथारे। दुषकुलिकुंकरइ। तरलतिस्नाफरकहइ। धनइंधनआगमसंयोगदि
नदिनअतिवइइ। लहलहेलोभपावकप्रबल। पवनमोहउद्धतवहे। दझहिउदारताआदिब
हु। गुनपतंगकोराकहे॥५९॥ कवित्त॥ बिलसेकामधेनुताकेघर। हरइकल्पद्रुमसुषपोष।
अषेडारतरइचिंतामनि। तिन्हकोअमृतसुरगअसमोष। तिनरवस्यकरत्रिभुवनको। तिन्हसोविमुषरहेड
षदोष। वसेनिधानमहातिन्हकेढिग। जिन्हकेहृदेवसतसंतोष॥६०॥ इतिलोभाधिकारसमाप्तः॥ अथ
४२ मदनाधिकारलष्यते॥ चौपाईछंद॥ मदअहिवदनहचनिजडारहिं। अगुनिकुंडमहितनपरजारहिं
दारहिंउदरकरहिंविषलतन। पेउशतानगेहेविचलन॥६१॥ सवैया॥ सोकृषिकारतयोचितचातुर।
मोकृषिकोकरनीहमगाने। बीजबवइनकोरउलषिचन। पावकसोफलकोपलताने। त्योऊमृतनीति
जस्वारथकेहित। दुर्जनतावहिएमदंआने। संपतिकारनबंधविदारन। सज्जनतासुषमूलनजाने॥६
२॥ अथतानकछंद॥ वरूदरिद्रताहोउ। करतमज्जनकला। दुराचारसोंमिले। राजसानहितला। ज्यों
शरीरकूसरुजसुमोसादेउदे। मरजिधूलताबहे। मरनकोहेउहे॥६३॥ छप्पय॥ नहितंपहिन ४२
8

परदोष। अल्पपरगुन बहुमानहिं। हिरदै धरहिं संतोष। दीन लषि करुना गनहिं। उचित रीति आदरहिं।
विमल नयनी तिन छंडहिं। निज मल न परदरहिं। रामरचि विषय विहंडहिं। मंडहिं न कोप कुर्वच
न मुनि। सहज मधुर धुनि उच्चरहिं। कहि कंवरपाल जग जाल बसि। ए चरित्र सज्जन करहिं॥६४॥
×२ ॥इति सज्जनाधिकार समाप्त॥ अथ गुनिसंगाधिकार लिष्यते॥ सवैया॥ सो करुना विनु धर्म विचारत
नइन विना लषिवे कौं उमाहइ। सो दुरनीति धरे जसहेत। सुधी विनु आगम कौ अवगाहइ। सो हिय सुन
कवित्त करइ। समता विनु सो तप सो तन दाहइ। सो थिरता विनु ध्यान धरे सठ। जो सतसंग तजे हित
चाहे॥६५॥ सवैया॥ कुमति निकंद होइ। महामोह मंद होइ। जगमगइ सुजस विवेक जगइ हियसौं
। नीति कौं दिढाउ होइ। विनइ कौ बढाउ होइ। उपजै उछाह ज्यौं प्रधान पद लियइ सौं। धर्म कौ प्रगास हो
इ। दुरगति कौ नास होइ। वरतइ समाधि ज्यौं पीयूष रस पियइ सौं। तोष परिपूर होइ दोष दिष्टि दूरि होइ
ए ते गुन होहिं सत संगति कौं कियइ सौं॥६६॥ कुंडलिया॥ कोरा तन मारग गहे। जे गुन गनि जे सवंत। ग्यान
कला जिन्ह कै जगइ। ते पावहिं सिव अंत। ते पावहिं सिव अंत। संतरस नित चित धरहिं। ते अघ आप दह ८

रहि। धर्मकारति विस्तारहिं। सोहैं सहज जे पुरुष पुनीवारि ज के तौरा। ते सुष संपति लहैं। गहें ते मारग कौ
रा॥६७॥ छप्पय॥ जो महिमा गुन हनै। जु हिन जिम वारिज वारै। जो स्वाप समेहरै। पवन जिम मेघ विडारै। जो स
म दम दल मलै। दौंर दव जिम उपवन षंडै। जो सुकर्म छय करै। वज्र जिम सिषरि विहंडै। जो कुमति अग्नि इंध
न सरिस। कुनय लता दिढमूल जग। सो दुष्टसंग दुष्ट कर। त जहिं विचक्षन तासु वैसग॥६८॥ इति गुन
संगाधिकार संपूर्ण॥ अथ इंद्रियाधिकार लिष्यते॥ गीताछंद॥ जे जगत जन कौं कुपथ डारहिं। वक्र सि
ष्य तुरंग से। जे हरहिं परम विवेक जीवन। काल दारुन उरग से। जे पुन्न विरष कुठार तीषन। गुपुत व्रत
मुद्रा करै। ते करन सुभट प्रहारि विजन। तव सु मारग पग धरे॥६९॥ सवैया॥ एई है कुगति कनिसे
नी। दुषदोषदानी। इनहीं की संगति सौं संग भार वहिये। इनकी मगनता सौं विभौ कौ विनास होइ। इन
ही की प्रीति सौं अनीति पंथ गहिये। यहीं तप भाव कौं विडारें दुराचार धारें। इनहीं की तपति विवेक भू
मि दहिये। एई इंद्री सुभट इन्हैं जीते सोई साधु। इनकौ मिलापी सो तौ महापापी कहिये॥७०॥ सवैया॥ ×२

मोन के धरैया गृहस्था गके करैया। विधि रीति के मथैया। पर निंद मैं अमंद है। विद्या के अभ्यासी गिरिकंद
रा के वासी। सुचि अंग के अचारी। हितकारी बैन वंद हैं। आगम के पाठी मन लाय महाकाठी। नारी कहैं कं
महनहार रमा हू मैं रूवंद है। इत्यादिक जीव सब। कारज करत रीते। इंद्रिन के जीते बिना सरवंग गहु
वेद है॥११॥ सवया॥ धर्म तरु भंजन को महा मत्त कुंजर से। आपदा भंडार के भरन को करोरी है। सत्य सी
ल रोकिवे को पौढ परदार जैसे। दुर्गति को मारग चलायवे को धोरी है। कुमति को अधिकारी कुनय
पंथ को विहारी। लछनी वढाइ धन जरायवे को होरी है। मृषा के सहाई दुरभावना के भाई। ऐसे विषया
भिलाषी जीव अघ के अघोरी है॥१२॥ इति इंद्रियाधिकार समाप्त॥ अथ कमलाधिकार। ...
सवया॥ नीच कउ रहे रे सरिता जिम। धूम वढावत नींद की नांई। चंचलता प्रगटे चपला जिम। अंध
करै जिम धूम कि झांई। तेज करै तिसना दव ज्यौं मद पोषति मद की नांई। यक रत्न तिकै र
कमला जगि डोलै ज्यों कुलटा विनु सांई॥१३॥ सवया॥ बंधु विरोध करइ निसि वासर। देइ नको न

रवइ अह तापन थइ आपता को धरै वहमरती नयद वी नता कहनुद ×१३.२

रवै छल जीवा पावक दाहत नीर वहावत। कैद गहै आतनि आचार दोवै। भूतल रस्त उजसदरइक
रिके डरहत्ति कु मन निघाव। एउन पान तउठ धन कहिग। दाम धनी कहु देय सुखसीन॥१४॥ सवया॥
नीच धनवंत नाहि निरखि असीस देइ वदन विलोके यदचर नग हर है। वदचित न को यठा नय दवा
को धनु मान। वा के जू वचन सत नय दंपम हनु है। ऐसी गति धारे न विचारे कहु गुन दोष। अस्याभि
लाषी जीव अरथ चहत है॥१५॥ सवया॥ नीच ही की ओर को उमगि चले कमला सु पिता सिंधु सलि
ल सुता ही दियो है। रहे न सुथिर है कंटक चरन याको वसी कंज मोहि कंज को सापद कियो है। जो
कौ मिले हित सों। अचेतन करि डारे ताहि। विष की वहिन ताते विष को सो हियो है। ऐसी ठग हारी जि
नि धरम कंपंच डारी। करि के सुकृत तिनि याको फल लियो है॥१६॥ इति कमलाधिकार॥
अथ दानाधिकार लिष्यते॥ कवित्त॥ चरन अ... ज्ञान। जिनमा विवेक प्रसम अमला
न। अनघ सुत्रात सुकृत गुन संचय। उच्च अमर पद वंध विधान। आगम गम्य परम्पर तप की रुचि ज
न्म मुकति पथ सोपान। एतुन प्रगट होहि निरूकघट। जो नर दहिं सुपत्न हि दान॥१७॥

सोद रिद्धि दल मलस्ता हि कुरता गन गंडै। सो नल दे अपमान सुतो विपदालय लंजै। तिसु न कोउ ड्डु षदेइ
नासु नव्याधि नवहइ। नाहि कृत समपरिहरै समुषदीनतां कहइ। सो लहै उच्चपद जगत मंहै। अघ अन
र्थनाम हि सरवर। कहि कवरपाल सो धन्य जर। जो सुषेत बोवइ दरव॥१८॥ सवैया॥ ताही कों सुबुद्धि व
रै रमा ताकी चाह करै। चंदन सुरूप है सु जस ताहि अस्वै। मह जसुहाग पावै। सुरगस मीप आवे
वारवार मुकति रमु निताहि चिरवै। ताही के सरीर कौ अलिंगन ति अरोगताई। मंगल करै मिताई प्रीति
करैप रवै। जो ई नर है सुचेत चित ममता समेत। धरम के हेत को सुषेत धन षरचै॥१९॥ कवित्त॥ ता
कीरति कीरति दासी सम। मद मारा जरिद्धि घर आवे। सुमति सुता उपजै ताके घट। सो सुरलोक सं
पदा पावे। ताकी दिष्टि लषै सिव मारग। सो निरबंध ताव ना लावे। जो नर त्यागि कपट कौ ताकहि। वि
धि सों सम पत षेत धन वावे॥८०॥ इति दानाधिकार समाप्तः॥ अथ तपाधिकार लष्यते॥ छप्पय॥ जो
पूरव कृत कर्म पिंड गिरि दलन वज्रधर। जो मनमथ मद ज्वाल माल सम हरन मेघझर। जो प्रचंड इं
४त द्रियनु भुजंग थंभन सुमंत्रवर। जो विनाव संतम सपुंज षंड न प्रतानकर। जो लब्धि वेलि उपजे २५

ति घर। ता सु मूल दिढ ता सहित। सो सु तप अंग बहु विधि दुविधि। कर हि विबुध वंछा रहित॥८१॥
सवैया॥ जाके आदरत महारिद्धि सौ मिलाप होइ। मदन अव्याप होइ कर्मवन दाहियै। विघन विना
स होइ गीरवान दास होइ ग्यान को प्रकास होइ। तो मसुद्ध थाहियै। देवपद षेल होइ मंगल सो मेल
होइ। इंद्रिनि कों नेल होइ मोष पंथ गाहियै। जाकी असीम महिमा प्रगट कहै कौरपाल। तिहुं लोक ति
हुं काल सो तप सराहियै॥८२॥ सवैया॥ ज्यों वर कानन दाहन कों दव। पावक सो नहि हूसरो दीसै। ज्यों
दव आगि वुझै न ततक्षन। जौन अषंडित मेघझरी सै। ज्यों प्रगटै नहि जो लगि मारुत। तो लगि घोरघ
टा न ही षीसइ। त्यों घट मैं तप वज्र विना दिढ। कर्म कुला चल और न पीसै॥८३॥ छप्पय॥ सुदिढ मूल
पद पुहप सुमंडित। सुकृत ताव विस्तार तार सित सुफल अषंडित। परतीति धार जल सिंचि किय। अ
नि उतंग दिन दिन पुषित। जयवंत जगीय दसुन पतरु। मुनि विहंग सेवहि सुषित॥८४॥ इति तपाधिकार स ×२
माप्त॥ अथ भावनाधिकार लष्यते॥ कवित्त॥ ज्यों नीराग उरु षके सन मुष ड्डर कामिनि कटाछक

रिरूपी। ज्यौं धनत्यागरहित प्रभु सेवन ऊसर मैं वरषा ज्यौं हरी। ज्यौं सिल मांहि कमल कौ बोवन। पवन
पकरि ज्यौं बंधिय मूठी। त्यौं करतूति होहि जिम निःफल। त्यौं विन भाव क्रिया सब कूरी॥८५॥ सवैया॥
सुखकर मंद है सुरवग्ग पद लहै। गहि पुनपंथ फिरि पाप मैं न आवना। करुना की कला जागै कठिन क
षाय भागै। लागै दान सील तप सुफल सुहावना। पावै भवसिंधु तट षोलै मोषद्वार पट। सर्म साधि धर्म
की धरा मैं करै धावना। एते सब काज करै अलष कौ अंग धरै। चेली चिदानंद की अकेली एक भावना॥८
६॥ सवैया॥ पूरसम कै पोषिवे कौं अंबिन की धारा सम। ग्यान वन सींचिवे कौं नारी भार त रही है। चंचल कर
न मृग बंधिवे कौं वागुरा सी। काम दव माल नासिवे कौं मेघ झरी है। प्रबल कषाय गिरि भंजिवे कौं वज्र
गदा। भौसमुद्र तारिवे कौं मोटी महा तरी है। मोष पंथ गाहिवे कौं वेसिरी विलाइनिकी। असी सुद्ध भा
वना अखंड धार ढरी है॥८७॥ श्री नानक छंद॥ गहि पुनीत आचार जिनागम जोवना। करि तप सं
जम दान भूमि का सोवना। पकरनी सब विफल होहि विनु भावना। ज्यौं तुस बोय हाथ कछु नहि आ
वना॥८८॥ इति भावनाधिकार समाप्त॥ अथ वैराग्याधिकार लिष्यते॥ सवैया॥ अरुनता धूलि

हरिवे कौं मारह सम। विसै विरति ऊलव धन कौं सोहाग है। उहित मदन तुरगा सिवे कौं तुरंग सम। अस
गज थंभन कौं अंकुस कौ दाग है। चंचल कुसुमन कपि रोकिवे कौं लोह फंद। कुसल कुसुमन पूज
इवे कौं वाग है। सुधै मोष मारग चलाइवे कौं नामी रथ। असो हितकर तत्त्ववेत्ता जन विराग है॥८९॥
श्री नानक छंद॥ ज्यौं समीर गंभीर घनाघन छय करै। विज्रवि नासै सिसिर दिवाकर तम हरै। ज्यौं द
व पावक पूर दहै वन कुंज कौं। त्यौं तजि वैराग करम के पुंज कौं॥९०॥ कवित्त॥ कीनी जिनि सुदेव
की पूजा तिनि गुरु चरन कमल मन लायो। सो वनवास वस्यो निसवासर तिनि गुनवंत पुरुष गुन गायो। तिनि
तप लियो क्रिया इंद्री दम। मोषरन विद्या पढि आयो। सब अपराध गए ताकौ तजि। जिनि वैराग रूप धन पायो।
॥९१॥ सवैया॥ जाकौ भोग भाव दीसै कारे नाग के सफन। राज कौ समाज दीषै जैसो रज कौ बद है। जाकौ प
रवार को बढाव घराबंध सम है। विषै सुष भोजन कौं विचारै विष पोष है। जो षयो वित्त जिन्यौं तसम कौ विन
ति करे। वनिता विलास मैं विलोकै दिढ दोष है। असो जो अनित्य भाग यह महि मावि राग ताकौ। ताही कौ वि
राग मही ताकि ढिग मोष है॥९२॥ इति वैराग्याधिकार समाप्त॥ अथ उपदेश गाथा लिष्यते॥ सवै 12

या॥ कैपरमसुरकी अरु वाविधि सौं गुरुकौं उपसर्पनकीजै। दीनविलोकि दयाधरियै चित। प्रासुक
दानसुपत्रहिं। गाहकु ह्वै गुनकौं गहियै रुचि सौं जिनआगमकौं सरपीजै। एकरनी करियै गृहमांहि
वसि। यौंजगमंहि नरलोफलं लीजै॥९३॥ गीताछंद॥ जौ करइ साम्रिक त्रिकाल सुमिरन। जासु जस
जगि विस्तरइ। सो सुमुन परमागम सुरुचि सौं। नीति मारग पग धरइ। जो निरषि दीन दयाश्रलुजे। का
मक्रोधादिक हरइ। जो सुधन सुपत सुषेत षरचै। ताहि सिव संपति वरै॥९४॥ वस्तुछंद॥ देवपू
जाहिं स्वाहिं गुरु सेव। परमागम चिधराहि। तजहिं दुष्ट संगति तत्तछन। गुन संगति आदराहिं। करु
हि त्याग ऊरनन्द छन छन। देहि सुपत्तहि दान नित। जपुहिं पंच नवकार। एकरनी जे आचरहिं। ते
पावहिं भवपार॥९५॥ दोहरा॥ गुन अरु धर्म सुथिर रहै। जस प्रताप गंभीर। कमल तहां ते जिमल
दलहै। तेहि मारग बलुवार॥९६॥ कवित्त॥ वंदन विनय सुकुट सिर ऊपरि। सुगुरु वचन कुंडल
जुगकानि। अंतर ग्रोत्रु वित तय भुज मंडन। सुकृत माल गुन नेउर गुन अमलान। त्याग सहजकर
कटक विराजत। सो जित संत सवद सुषपान। भूषन तनहि तन मंडित। या तैं संतपुरु षपरक्ष
म॥९७॥ सवैया॥ गहै जे सुजनरीति गुनी सौं निवाहइ प्रीति। सेवा साधइ गुरुकी विनइ सौं करजो
रिकै। विद्या कौं विसनधरै परतिय संग हरै। दुर्जनकी संगति सौं बैठ मुषमोरिकै। तजै लोकनिंदका
ज। पूजैं देव जिनराज करै जे करन थिर उमंग वहोरिकै। तेई जीव सुषी होहि। तेई मोषसुषी होहि। ते
ई सोहि परम कुरम फंद तोरिकै॥९८॥ सवैया॥ परनिंदा त्याग करु मनमें विराग धरु। क्रोध मान
माया लोभ चारो परिहरु रे। हिरदै मैं तोष गहु समता सौं मीरो रहु। धरम कौ भेद लहु षेद मैं न प
रु रे। करम कौ वंस षोउ सुकृति को पंथ जोउ सुकृत को बीज बोउ। दुरित सौं डरु रे। औरनर असे
होहि। वारवार कहौं तोहि। नाहीं तौ मिथ्या रूप निगोद तेरा घरु रे॥९९॥ कवित्त॥ श्रावक
जागुन संचेतन। वरसें ताकु मति करहि विलंब। इंद्रिन सुष लवलेस जग तम है। तिंब विरष मांहि
लगे न अंब। तातें तूं अंतर विपछ हरु। करु वल सजिन अस करेव। गहु गुन ग्यान वैठु चारि
तरथ। देहि मोष मग गमन सुषवेव॥१००॥ इति ग्रंथ समाप्तः॥ अथ सो गलिष्यते॥ कवित्त॥ जिन
वंस सिर हंस दिगंबर। मुनिपति अजितदेव अति आरज। ताके पट वादि मद भंजन। प्रगटे सिंहअ

चारी।ताकेपदनाममोमप्रत।तिन्हैग्रंथकियौहितकारज।तोकेपदतमुनतअवधारत।होहि
सुरूपतेपुरुषअनारत।।२०१।।दोहरा।।नामसूक्तिमुक्तावली।द्वाविंशतिअधिकार।सतमिलो
कपरवानसब।इतिगरंथविस्तार।।२०२।।चौरपालवानारसी।मित्रजुगलइकचित्त।तिन्हयह
गरंथनाषाकियौ।बहुविधछंदकवित्त।।२०३।।सोलहसैइक्यानवे।रितुग्रीषमबैसाख।सोम
वारएकादशी।करनक्षत्रशितपाष।।२०४।।इतिश्रीसूक्तिमुक्तावलीनाषासंपूर्णं।। श्री...

सिदुर प्रकार श्लोक
320